UGC NET JRF… Paper =2 Sanskrit

Filler Form

Class-6

By=NIDHU CHAUDHARY

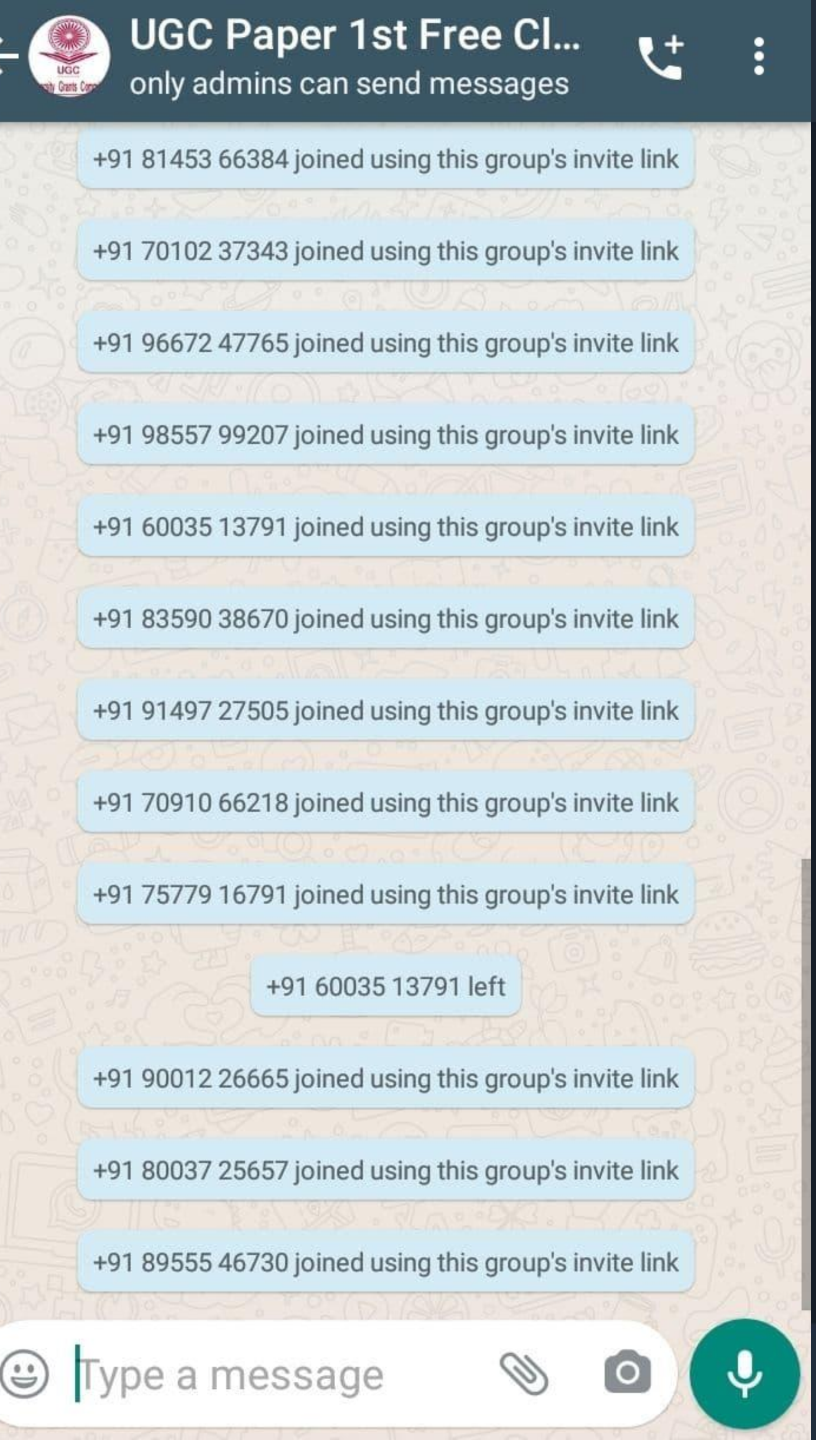
UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages
+91 81453 66384 joined using this group's invite link
+91 70102 37343 joined using this group's invite link
+91 96672 47765 joined using this group's invite link
+91 98557 99207 joined using this group's invite link
+91 60035 13791 joined using this group's invite link
+91 83590 38670 joined using this group's invite link
+91 91497 27505 joined using this group's invite link
+91 70910 66218 joined using this group's invite link
+91 75779 16791 joined using this group's invite link
+91 60035 13791 left
+91 90012 26665 joined using this group's invite link
+91 80037 25657 joined using this group's invite link
+91 89555 46730 joined using this group's invite link
Type a message

UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers
December 28
Channel created
Channel photo changed
UGC
rsity Grants Comm
Broadcast

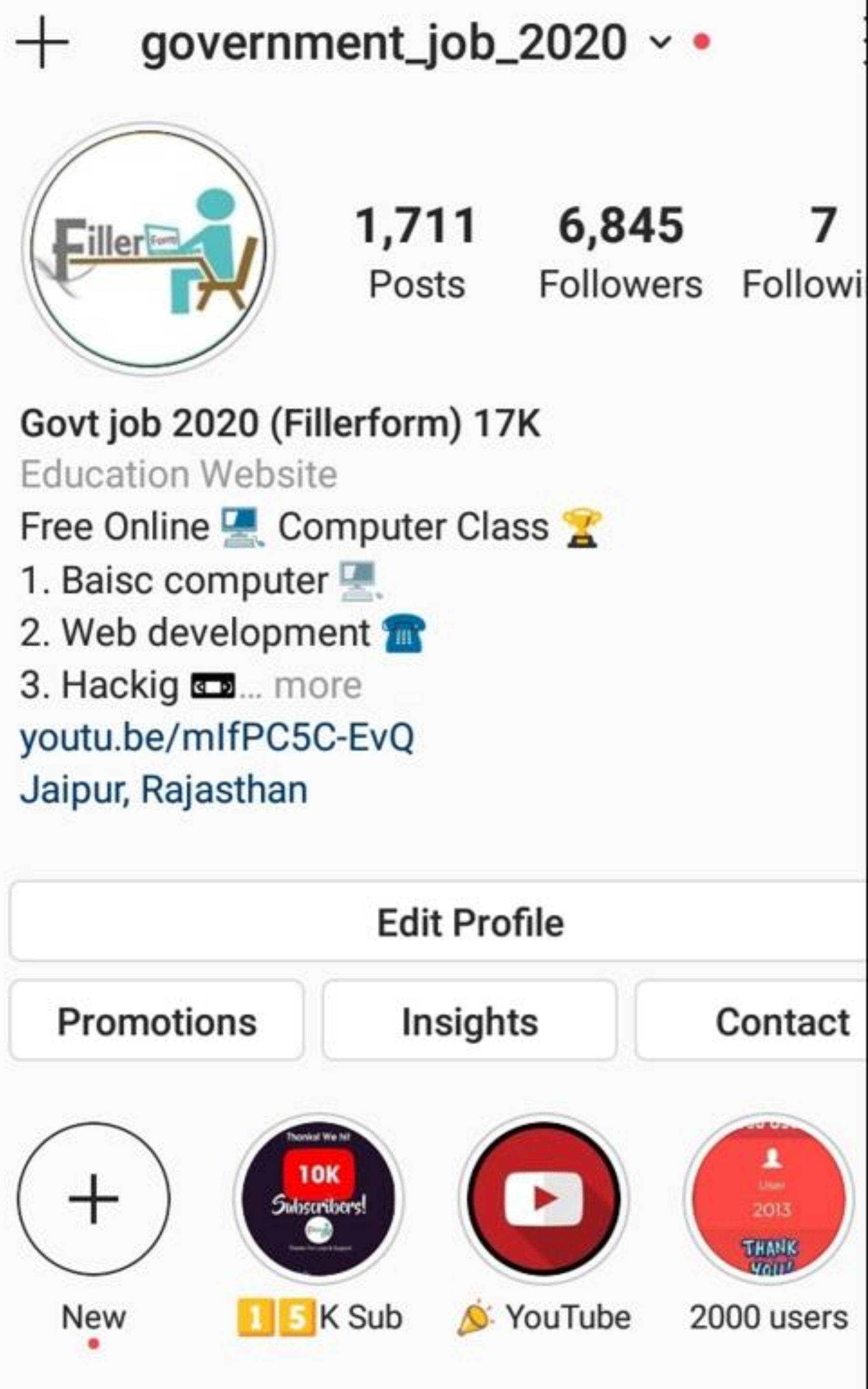
government_job_2020
1,711
Posts
6,845
Followers
7
Followi
Govt job 2020 (Fillerform) 17K
Education Website
Free Online 💻 Computer Class 🏆
1. Baisc computer 💻
2. Web development ☎
3. Hackig 📼... more
youtu.be/mIfPC5C-EvQ
Jaipur, Rajasthan
Edit Profile
Promotions
Insights
Contact
New
1 5 K Sub
YouTube
2000 users

UGC NET 100% Off Free Class

Free Notes

Live Class

100% OFF

5000+MCQ+PYQ

Free Books

fillerform

8209837844

Unit 1 वैदिक साहित्य का सामान्य परिचय

- वैदिक साहित्य का इतिहास
- वेदो का रचनाकाल
- संहिता साहित्य
- ब्राह्मण साहित्य
- आरण्यक साहित्य
- वैदिक संवाद सूक्त
- वेदाङ्गो का संक्षिप्त परिचय

वेदाङ्गो का संक्षिप्त परिचय

वेदांग का शाब्दिक अर्थ है वेदों के अंग। वेदांग हिन्दू धर्म ग्रंथ हैं, इनकी संख्या 6 है।

= शिक्षा
= व्याकरण
= ज्योतिष
= निरुक्त
= छंद
= कल्प

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यतेज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्तस्मात्सांगमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते॥

छन्द को वेदों का पाद,
कल्प को हाथ,
ज्योतिष को नेत्र,
निरुक्त को कान,
शिक्षा को नाक,
व्याकरण को मुख कहा गया है।

शिक्षा

वैदिक मंत्रों के शुद्ध उच्चारण के लिये इसकी रचना हुई।
इससे संबंधित प्राचीनतम ग्रन्थ – प्रतिशाख्य है।

इसमें वेद मन्त्रों के उच्चारण करने की विधि बताई गई है। स्वर एवं वर्ण आदि के उच्चारण-प्रकार की जहाँ शिक्षा दी जाती हो, उसे शिक्षा कहाजाता है।

इसका मुख्य उद्येश्य वेदमन्त्रों के अविकल यथास्थिति विशुद्ध उच्चारण किये जाने का है। शिक्षा का उद्भव और विकास वैदिक मन्त्रों के शुद्ध उच्चारण और उनके द्वारा उनकी रक्षा के उदेश्य से हुआ है।

व्याकरण

वेदों में प्रयुक्त की गई संस्कृत – व्याकरण का सरलीकरण इसमें मिलता है। संबंधित ग्रंथ – पाणिनि का अष्टाध्यायी(5 वी. शता. ई.पू.)।

इससे प्रकृति और प्रत्यय आदि के योग से शब्दों की सिद्धि और उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित स्वरों की स्थिति का बोध होता है।

वेद-शास्त्रों का प्रयोजन जानने तथा शब्दों का यथार्थ ज्ञान हो सके अतः इसका अध्ययन आवश्यक होता है। इस सम्बन्ध में पाणिनीय व्याकरण ही वेदांग का प्रतिनिधित्व करता है। व्याकरण वेदों का मुख भी कहा जाता है।

ज्योतिष

शुभ – अशुभ तथा वैदिक यज्ञों में कर्मकांडों के शुभ- अशुभ फलों के प्रभाव को जानने के लिये ग्रह नक्षत्रों का अध्ययन किया जाता है।
इससे संबंधित ग्रंथ – मागध मुनि का वेदांग ज्योतिष।

इससे वैदिक यज्ञों और अनुष्ठानों का समय ज्ञात होता है। यहाँ ज्योतिष से मतलब `वेदांग ज्योतिष´ से है। यह वेद पूरुष का नेत्र माना जाता है।

वेद यज्ञकर्म में प्रवृत होते हैं और यज्ञ काल के आश्रित होते है तथा जयोतिष शास्त्र से काल का ज्ञान होता है। अनेक वेदिक पहेलियों का भी ज्ञान बिना ज्योतिष के नहीं हो सकता।

निरुक्त

इसमें वैदिक साहित्य में प्रयुक्त कठिन शब्दों की व्युत्पत्ति मिलती है। इससे संबंधित ग्रंथ – निगंठु । इस ग्रंथ में वैदिक सांहित्य के कठिन शब्द मिलते हैं।

वेदों में जिन शब्दों का प्रयोग जिन-जिन अर्थों में किया गया है, उनके उन-उन अर्थों का निश्चयात्मक रूप से उल्लेख निरूक्त में किया गया है। इसे वेद पुरुष का कान कहा गया है। निःशेषरूप से जो कथित हो, वह निरुक्त है। इसे वेद की आत्मा भी कहा गया है।

छंद-

वैदिक साहित्य के मंत्रों के लिये प्रयुक्त किये गये विभिन्न छंदों का उल्लेख छंद नामक वेदांग में हुआ है।

इससे संबंधित ग्रंथ- पिंगलमुनि का छंद सूत्र।

वेदों में प्रयुक्त गायत्री, उष्णिक आदि छन्दों की रचना का ज्ञान छन्दशास्त्र से होता है। इसे वेद पुरुष का पैर कहा गया है।

ये छन्द वेदों के आवरण है। छन्द नियताक्षर वाले होते हैं। इसका उदेश्य वैदिक मन्त्रों के समुचित पाठ की सुरक्षा भी है।

8209837844 www.ugc-net.com

छन्द	अक्षर
गायत्री	24
उष्णिक्	28
अनुष्टुप	32
बृहती	36
पंक्ति	40
त्रिष्टुप	44
जगती	48

कल्प

वैदिक साहित्य में प्रयुक्त विभिन्न प्रकार के कर्म – कांडों को कल्प सूत्र में लिखा गया है।

= इसके 4 भाग हैं(कल्प को ही सूत्र साहित्य कहा गया है)-

1.**धर्म सूत्र** वैदिक समाज के सामाजिक नियम – कानून सूत्र रूप में मिलते हैं । इसमें एक – एक पंक्ति में श्लोक मिलते हैं। इसी धर्म सूत्र पर आगे स्मृति ग्रंथ लिखे गये।

2.गृह्य सूत्र- व्यक्ति और परिवार से संबंधित व्यक्तियों और कर्म –कांडों का उल्लेख है।

3.श्रौत सूत्र- इस सूत्र में संपूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिये विविध प्रकार के कर्मकांड दिये हुये हैं।

4.शुल्व सूत्र- शुल्व का शाब्दिक अर्थ होता है-रस्सी । इसमें वैदिक यज्ञों के निर्माण की विधि (हवन कुण्ड को बनाने की विधि) बताई गई है। यज्ञ वेदियों का प्रकार कैसा होगा , वो सब इसमें बताया गया है। इसे भारतीय ज्यामिति का प्राचीनतम ग्रंथ कहा गया है।

8209837844
www.ugc-net.com

🏆 We want JRF 🏆

💥 आपको ये क्लास कैसा लगा ??

📝Comment box में अपना comment कर के Next Class में आपका solution पाए 🗐 📝

For More Information

www.ugc-net.com

/Fillerform /Fillerform /Fillerform

info@fillerform.com

8209837844